अस्मिता की खोज

अखिलेश्वर सिंह

साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य प्रत्येक युग के समाज में अपने को ढूँढता आया है वह चाहे छायावाद (1918–1936) हो या उसके पूर्व का साहित्य। आचार्य शुक्ल ने लिखा है चूंकि ''प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है''' इसलिए जिस समय का जैसा समाज होगा, साहित्य भी वैसा ही होगा। अतः प्रत्येक युग की जातियाँ अपने तात्कालिक सन्दर्भ में जिन मूल्यों का निर्धारण करती है साहित्य उसी का मूल्यांकन करता है चाहे वह छायावादी साहित्य हो या 'भारतेन्दु युग' (1850–1900) या कि द्विवेदी युग (1900–1918) का साहित्य हो। अगर किन्ही कारणों से (राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक) इन मूल्यों में विघटन होता है तो पुनः साहित्य नये मूल्यों के खोज की ओर जनता को प्रेरित करता है– ''द्रुत झरो जगत क जीर्ण पत्र ! हे स्त्रस्त–ध्वस्त!! हे शुष्क–शीर्ण्।'' छायावादी साहित्य इन्हीं सन्दर्भों में अस्मिता की खोज का साहित्य है।